Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to include 'Gita' (the Holy Book) in the College and University curricullum.

डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा (रोहतक): अध्यक्ष महोदय, पूरा देश नवम्बर-दिसम्बर में गीतामयी हो गया है । इसमें हरियाणा के माननीय मुख्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर जी का प्रयास है और गीता मुनि स्वामी ज्ञानंद महाराज की वजह से पूरा देश गीतामयी हो गया है । जैसा कि सर्वविदित है कि श्रीमद् भगवत गीता एक सर्वकालिक और सर्व अलौकिक ग्रंथ है । इसकी उपयोगिता को देखते हुए वर्ष 1785 में वारेन हेस्टिंग्स ने चार्ल्स विलिकिन्स के द्वारा इसे अंग्रेजी में अनुवाद कराया । उसके बाद 15 वर्षों में इसका फ्रेंच और जापानी भाषाओं में अनुवाद हुआ । आज न्यूजर्सी, हार्वर्ड और सियाटन यूनिवर्सिटीज में इसको पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी इसे उत्तरों की किताब (बुक ऑफ आनसर्स) कहते थे । वास्तव में श्रीमद् भगवत गीता जी सभी समास्याओं का समाधान हैं । उदाहरण के तौर पर, चिकित्साओं के लिए चिकित्सा शास्त्र, कानून व न्यायवादियों के लिए न्यायशास्त्र, मनोवैज्ञानिकों के लिए मानस शास्त्र और दार्शनिकों के लिए दर्शन शास्त्र है । इसे आप जिस दृष्टि से देखेंगे, वैसी ही प्रतीत होती है । हमारा कोई दृष्टि दोष है कि हम इसका पूर्ण उपयोग नहीं कर सकें हैं । मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि स्वाधीनता सेनानियों के लिए यह जीवन का अंग रही है । मेरी केन्द्र सरकार से प्रार्थना है कि श्रीमद् भगवत गीता को स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाए ।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने सदन में सहमति दी है, घड़ी लगी हुई है ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नो ।

...(व्यवधान)

डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा : अध्यक्ष महोदय, इसे स्कूलों में, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप इसको ऐसे बोलते कि माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूं कि गीता को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए । तीस सेकेंड में बात पूरी हो गई ।

श्री पी.के. कुनहलिकुट्टी ।